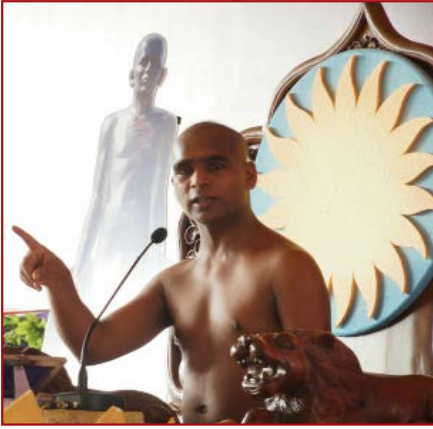


जैनाचार

mūke l a e ; kuh bāe; dks o'k ea j [kuk

इंद्रिय को वश में रखना इंद्रिय संयम है। प्राणी पीड़ा का परिहार करना प्राणी संयम है। स्पर्श, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण ये पांच इंद्रियां हैं। इन इंद्रियों के विषयों में आसक्त हुआ यह मोही प्राणी अपने स्वभाव को भूल रहा है। अपनी ही अज्ञानता का परिणाम है कि सामर्थ्य शक्तिवान होते हुए भी इनका दास बना हुआ है। स्पर्श इंद्रिय के वशीभूत हुआ हाथी कृत्रिम हथिनी की चाह में अपने को गड़ड़े में गिरा देता है। रसना, मछली का जीवन छीन लेती है। गंधलोलुपी भ्रमर कमल पत्रों में दबकर मर जाता है। रूप का अनुरागी पतंगा दीपक की लौ पर जलकर मर जाता है तथा स्वर संगीत में बंधा हुआ हिरण जीवन से हाथ धो बैठता है। एक-एक इंद्रिय विषयों की अधीनता का परिणाम जब इस तरह का है तब फिर पांचों इंद्रियों के वशीभूत हुए प्राणी की क्या दशा होगी? इसका विचार आप स्वयं ही कर सकते हैं।



अच्छा-अच्छा स्वाद लेना, गंध लेना, मनोहर रूप, आकृतियां देखना तथा कर्णप्रिय गीत-संगीत सुनना, इन्हीं विषयों की पूर्ति में जीवन लगा है, मन रमा है इसी में। असल में इन सबका रस लेने वाला तो मन ही है। मन के इशारे पर ही इंद्रियाँ प्रवृत्ति करती हैं। अतः मन को भी संयत बनाना जरूरी है। मोह की मदिरा पीने वाला यह मन अनेक अनर्थ कराता ही है। अतः मन की इस प्रवृत्ति को समझकर हम इसके मालिक बनें, गुलाम नहीं। इसकी दासता से मुक्त होकर इंद्रिय जेता बनें तभी सच्चे जैन और जिन बन पाएंगे। दशधर्म की पूजन में भी कहा है।

जिस बिना नहीं जिनराज सीझे, तू रूखों जग कीच में।

इक घरी मत विसरो, करो नित, आव जम-मुख बीच में।।

पसंद नापसंद गुस्से का त्याग करना। इन सब से छुटकारा तब ही मुमकिन है जब अपनी आत्मा को इन सब प्रलोभनों से मुक्त करे और स्थिर मन के साथ संयम रखे। इसी राह पर चलते परम आनंद मोक्ष की प्राप्ति मुमकिन है।

jkt xhj fLFkr mn; fxfj ioZ rygVh fLFkr fnxĒcj t Si eānj



जैन धर्म के 20 वें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ जी के गर्भ, जन्म, तप एवं कैवल्य ज्ञान चार कल्याणक स्थली व भगवान महावीर स्वामी के प्रथम देशना स्थली से सुशोभित राजगीर स्थित उदयगिरि पर्वत तलहटी स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में दशलक्षण पर्व के पांचवें दिन गुरुवार को उत्तम सत्य धर्म के अवसर पर अभिषेक, शांतिधारा, पूजा-अर्चना हर्षोल्लासपूर्वक जैन श्रद्धालुओं ने किया।

प्रवीण जैन (पटना)

duk/d esālekōyĒc; kausmūke l R; ēkēZdh i w k dh



परम पिता परमेश्वर 1008 आदिनाथ भगवानजी के चैत्यालय में प्रज्ञाश्रमणी गणिनी आर्यिकारत्न 105 श्री शुभमति माताजी के परम शिष्य बा.ब्र.दर्शन भैया के उपस्थित में ब्रहस्पतिवार को कर्नाटक में धर्मावलम्बियों ने उत्तम सत्य धर्म की पूजा की। इस दौरान श्रद्धालुओं ने विश्व शांति के लिए मंगल कामना की। केवल जैन धर्म में ही सत्य बोलने की बात नहीं है। विश्व में जितने भी धर्म व सम्प्रदाय हैं, सभी में सत्य को प्राथमिकता दी गयी है। हमारे जीवन में हर प्रकार का व्यवहार सत्य रूप हो तो हम अपने उत्तम धर्म को पा सकते हैं।

i; Zk k ioZij gks jgs fofok ēkēZl dk; Øe ēĒj; kon

सबसे बड़े पर्व दशलक्षण पर्व धर्मनगरी धरियावद में बड़े आनंद के साथ आयोजित हो रहे हैं। नगर के सभी मन्दिरों में धूमधाम से एवं सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए श्रद्धालु पूजा अर्चना अभिषेक आरती कर रहे हैं। देवाधिदेव श्री महावीर मन्दिर में पुज्य मुनि शुभमसागर जी एवं पुज्य मुनि सुश्रुत सागर जी महाराज के सानिध्य में धर्मप्रभावना हो रही है तो वहीं श्री चन्द्रप्रभु मन्दिर में उत्तम आर्जव धर्म की सन्ध्या में वात्सल्य वारिधी आचार्य श्री वर्धमान सागर जी के 70 वे अवतरण दिवस पर दीपो से आरती की गई, साथ ही दो तपस्वीगण की 5 उपवास की साधना कर रहे हैं। दिनांक 29 अगस्त से अनन्तव्रत प्रारम्भ होगा जिसमें श्रावक भगवान अनन्तनाथ स्वामी की आराधना करेंगे साथ ही 31 अगस्त को दिगम्बर जैन महु अतिशय क्षेत्र पर भगवान त्रिलोकीनाथ स्वामी का घृत से शान्ति धारा होगी जिसमें नगर के श्रावकगण भाग लेकर धर्मलाभ प्राप्त करेंगे। इस प्रकार नगर में धर्ममयी वातावरण बना हुआ है।



साभार - लक्की रमावत, धरियावद (राजस्थान)

आत्म प्रक्षालक : दशलक्षण पर्व
प.पू. गणिनी आर्यिका शुभमति माताजी



उत्तम संयम: सम् + यम = संयम अर्थात् पांचों इंद्रिय और मन पर सम्यक् रीति से विजय प्राप्त करना तथा षट्काय जीवों की रक्षा करना संयम धर्म है।

जीवन में ही नदी के लिए संयम रूपी तटों का बंधन जरूरी है। संयमित जीवन ही अपने अनन्त सुख के लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। संयम की प्राप्ति मात्र मनुष्य पर्याय में ही संभव है। अतः स्वर्गों के देवता भी उस मानव ही पर्याय को पाने के लिए तरसते हैं। प्राणी संयम के भेद से संयम दो प्रकार का है। तथा पंचेन्द्रियों के विषयों से विरक्त होकर मन की आकांक्षाओं पर नियंत्रण करना इंद्रिय संयम है।

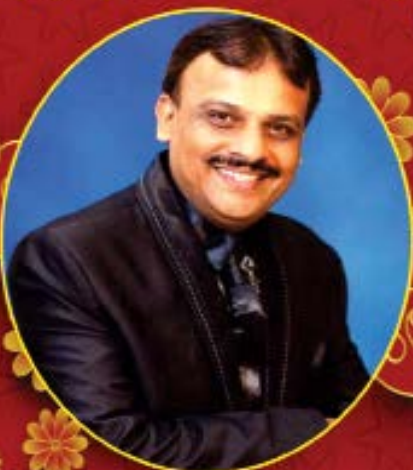
संयम रत्न अत्यन्त दुर्लभ है, संयम रूपी अमूल्य रत्न को छोड़ने का मन में भाव भी नहीं करना, क्योंकि एक बार भी जिसके मन में इस प्रकार के भाव (परिणाम) आ जाते हैं उसका संयम एक न एक दिन अवश्य चला जाता है। ओर संयम की विराधना करनेवाला नरक जाता है। संसारावली में परिभ्रमण करता रहता है। तथा वह तीन काल में भी सुगति को प्राप्त नहीं कर पाता। अतः संयम भूलकर भी नहीं छोड़ना।

अतः भव्य बन्धुओं! आप सभी अपने जीवन में इस पावन संयम धर्म के अवसर पर संयम श्रृंगारित कर अभीष्ट आत्म सुख निर्वाण सुख को प्राप्त करें।

घर घर मंदिर...घर घर भगवान...



Happy Birthday!!!



आपका जन्म दिन है खास क्यूंकि आप होते है सवके दिल के पास और आज पूरी हो आप कि हर आस

SANDIP GANDHI - Borivali, Mumbai